वाइटल फोर्स (जीवनी शक्ति)

आज हम ऐसी चिकित्सा पद्धति की बात करने जा रहे हैं, जिस पद्धति का सम्पूर्ण सम्बन्ध हमारे मन के साथ है। जिसमें मन में चलने वाले संकल्पों के द्वारा होने वाले शारीरिक परिवर्तन के आधार से दवाई दी जाती है। इस चिकित्सा को होम्योपैथी चिकित्सा नाम देते हैं। होम्योपैथी चिकित्सा शैली डॉ. सैम्युअल हनीमन नामक जर्मन डॉक्टर द्वारा खोजी गई है। इसका सिद्धान्त है, समान ही समान का उपचार करता है (likes cures likes)।

इसमें बीमारी का उद्भव शरीर नहीं, शरीर के भीतर जीवनी शक्ति (vital force) है। अगर हमें बीमारी का इलाज करना है तो दवा को जीवनी शक्ति पर अपना प्रभाव डालना है। इसके लिए होम्योपैथिक दवाई को शक्ति प्रदान की जाती है, जिसको हम शक्तिकरण (potentisation) कहते हैं। जिससे इसमें ऊर्जा शक्ति हमारी जीवनी शक्ति के समान हो जाती है। इस तरह दवाई उसी स्तर पर कार्य करती है।

जब कोई रोग ग्रस्त होता है तो मुख्य तौर पर यह जीवनी शक्ति ही, जो शरीर के हर हिस्से में रहती है, वह आक्रान्त होती है और व्यक्ति रोगी बन जाता है। इसका अर्थ यदि हम सामान्य भाषा में समझें तो कह सकते हैं कि जब हमारी आत्मा की ऊर्जा पूरे शरीर में जहाँ जहाँ नहीं फैलती है, वहाँ पर पैचेज़ बन जाते हैं, अर्थात् वहाँ दर्द होता है, या कुछ शारीरिक रोग के लक्षण प्रकट होने लग जाते हैं। इसलिए होम्योपैथी में उस रोग से लड़ने के लिए उसके समान ही दवाई को शक्ति प्रदान की जाती है। स्वस्थ होने के लिए व्यक्ति के न केवल शारीरिक अंगों के लक्षण बल्कि मानसिक लक्षण को अधिक महत्व दिया जाता है। इस चिकित्सा में होम्योपैथिक औषधि भौतिक रूप में औषधि नहीं है, शक्ति है जो कि होलिस्टिक (holistic approach, समग्र दृष्टिकोण) पर आधारित है।

इसी सिद्धान्त को यदि हम जीवन के अनेकानेक दायरों के साथ देखते हैं, तो कोई भी बीमारी की शुरुआत इसी तरह से हमारे साथ होती है। होम्योपैथी बिल्कुल इस बात को सौ प्रतिशत मानता है, उसका कहना है कि, शरीर में दवाइयों से ज़्यादा वायब्रेशन्स से प्रभाव बढ़ता जाता है। हालांकि इस पद्धति का प्रयोग, मनोवैज्ञानिक अपनी प्रायोगिक स्थिति के लिए रखे हुए हैं। आपको पता हो, जब डॉक्टर किसी रोगी को देखता है, तो वो उसके मन के साधारण, व्यर्थ, नकारात्मक, उत्तेजित करने वाले विचार के साथ-साथ सपने तक को देखता है। उसके आधार से वो दवाई देता है। यह सिद्धान्त पूरी तरह से साइकिक है, या मनोवैज्ञानिक है। जिसमें डॉक्टर से सिर्फ बात करने के बाद और दवाई की कुछ बूंदें मुँह में डालने से ही प्रभाव पड़ने लग जाता है, [illegible] उसका प्रभाव भावनात्मक मन पर ज़्यादा है। आप सोच सकते हैं- दवाइयाँ प्रभाव डाल रही हैं, कि आपके मन के विचार। अब आने वाले समय में इस प्लेसबो तकनीकी को अपनाकर ही इलाज होगा। हो सकता है कि इसे समझने में थोड़ा समय लगे, लेकिन होगा बहुत जल्द ही। इसी वाइटल फोर्स या जीवनी शक्ति को आम भाषा में आत्मा कहा जाता है। इससे उठने वाले पूरे विचारों का प्रभाव शरीर पर पड़ता है और हम रोगी बन जाते हैं। जब तक आप इस बारे में समझ इसपर कन्ट्रोल नहीं करेंगे, तब तक कुछ भी अच्छा नहीं होगा।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न: आजकल अकाले मृत्यु बहुत हो रही है। लोगों में स्वयं को खत्म करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। लोग इसे दु:खों से छूटने का साधन मानने लगे हैं। जिस घर में कोई आत्महत्या करता है, उस घर का माहौल बहुत गमगीन रहता है। दु:खद बात है कि कई परिवारों में आत्महत्या एक प्रथा सी बन गयी है। परिवार में विशेष माँ को ये भूलना बहुत कठिन हो जाता है जब उसका जवान बेटा आत्महत्या कर लेता है, ऐसे में योग के बाद भी चित्त शांत नहीं होता, क्या करें?

उत्तर: जीवन में अति दु:खी, निराश, बेसहारा, तनावग्रस्त या बार-बार असफल होने पर युवक या अन्य कोई मृत्यु के कटघरे में खड़े होने को तैयार हो जाते हैं। अति दु:खी होकर वो सोचते हैं कि यही दु:खों से छूटने का उपाय है, परन्तु सभी को ध्यान रहे की जीवघात करने के बाद मनुष्यात्मा की अति दुर्गति हो जाती है। उसके दु:खों में 100 गुणा वृद्धि हो जाती है। ऐसी आत्मा को पुनर्जन्म भी नहीं मिलता और वो सदा भूखी, प्यासी, दु:खी, अशांत अंधकार में भटकती रहती है। यह अति भयावह स्थिति होती है और इससे निकलना अब उनके हाथ में नहीं होता। इसलिये जिनको भी ये दूषित विचार आते हैं, वे इन विचारों का त्याग करें। उन्हें याद करना चाहिए कि जीवन भगवान की सुन्दर सौगात है, इसे नष्ट करना माना उसका अपमान करना है।

जीवन में उतार-चढ़ाव, सुख-दु:ख, हार-जीत ये सब तो होंगे। हिम्मत व ईश्वरीय सहयोग से इन्हें पार करना है। अपने जीवन को नष्ट करना माना अपने सम्पूर्ण भविष्य को नष्ट कर देना होगा, इसलिये राजयोग के द्वारा स्वयं में बल भरें। ईश्वरीय सेवा में स्वयं को व्यस्त करें और किसी को अपने मन की बात कहकर उनकी मदद लें।

जिन घरों में ऐसा होता है, वहाँ से तो खुशी व चैन लंबे काल के लिए जैसे विदाई ले लेती है। उस घर में पुन: खुशी व शांति के वायब्रेशन्स पैदा करने चाहिए। जो आत्माएँ गयी हैं, उन्हें कुछ दिन तक रोज़ एक घण्टा योगदान करना चाहिए और उन्हें भोग भी लगवा देना चाहिए।

जब किसी माँ का जवान बच्चा आत्महत्या कर लेता है तो माँ-बाप का दिल तो टूट ही जाता है। उन्हें उसकी याद बार-बार सताती है और जीवन के सुखों से दूर ले जाती है। ऐसे में प्रथम तो इस अनहोनी घटना को स्वीकार करके आगे की ओर देखना चाहिए। यद्यपि ये स्वीकार करना अति दुष्कर कार्य होता है, परन्तु चूँकि अब इस दुर्घटना को टाला नहीं जा सकता इसलिये इसे स्वीकार करके आगे बढ़ना ही चाहिए और सवेरे उठते ही 108 बार लिखें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। रात में सोने से पूर्व लिखें कि मैं एक महान आत्मा हूँ। प्रतिदिन मुरली क्लास में अवश्य जाएँ और कुछ समय यज्ञ सेवा में व्यतीत करें। इससे मन शांत होगा और उनको भी योगदान दे सकेंगे।

प्रश्न: मैं एक कन्या हूँ। मेरे अंकल ही हमारे ऊपर बहुत तंत्र-मंत्र करते हैं। वो चाहते हैं कि केवल उनका नाम ही हो, हमारा नहीं। हम उनसे बहुत तंग आ चुके हैं। इससे बचने का हम क्या उपाय करें?

उत्तर: दूसरों पर तंत्र-मंत्र का प्रयोग करके कई लोग बहुत पाप कर रहे हैं। ऐसे लोगों की दुर्गति तो निश्चित है, पर आपके साथ तो स्वयं भगवान है। आपको तो थोड़ा-बहुत कष्ट ही हो सकता है, बाकी तंत्र-मंत्र की शक्ति राजयोग की शक्ति के आगे गौण है। आप अपने अंकल के लिए शुभ-भावनाएँ रखा करो। भले ही वे आपके लिए शत्रुता रखते हैं, पर आप उसके लिए मित्र बनकर रहो।

आप अपने घर में आधे-आधे घण्टे इस स्वमान से योग किया करो कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और सर्वशक्तिवान की किरणें मुझमें समाकर पूरे घर में फैल रही हैं। दूसरी बात, सारा दिन इस स्वमान का अभ्यास करना कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और तीसरी बात एक लोटे में पानी लेना, उसे दृष्टि देकर 21 बार ये संकल्प करना कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और फिर रोज़ उस पानी को पूरे घर में छिड़क देना। इससे उसके तंत्र-मन्त्र के सभी प्रयोग नष्ट होते रहेंगे और राजयोग के समक्ष उसे हार माननी पड़ेगी।

प्रश्न: बाबा हमेशा कहते हैं कि बाप के दिलतख्तनशीन रहो। कौन बैठ सकते हैं बाबा के दिल पर और हम कैसे समझें कि हम दिलतख्तनशीन हैं या नहीं?

उत्तर: भगवान के दिल पर राज्य करना - सोचकर ही कितना आनन्द होता है। इसका अर्थ है हमें वे बहुत प्यार करते हों, वे हमें बहुत चाहते हों, वे हमारा हमेशा ध्यान रखते हों। यह फीलिंग अंदर ही अंदर आयेगी। कई यह सोचकर परेशान रहते हैं कि शायद बाबा के दिल पर तो वही हैं जो साकार में उनसे स्टेज पर मिलते हैं। वे कभी - कभी यह भी देखते हैं कि स्टेज पर तो बाबा उन्हें बहुत प्यार कर रहा है जिनकी स्थिति निम्न स्तर की है, तो कईयों के बहुत संकल्प चलते हैं। परंतु नहीं, वे तो प्यार के सागर हैं, सबको ही प्यार करते हैं। देखना यह है कि जिन्हें वे प्यार करते हैं, उनके प्यार का रेस्पॉन्स वे क्या करते हैं? यदि वे ईश्वरीय आज्ञाओं पर पूर्णतया नहीं चलते तो प्यार के सागर का प्यार भी उनका कल्याण नहीं कर सकता।

घर बैठे ही आपको बाबा का प्यार अनुभव होगा, उनकी मदद अनुभव होगी, उनकी दृष्टी अनुभव होगी। अमृतवेला सुखद अनुभूति होगी, मुरली से उनका प्यार अनुभव होगा। ये ही है सच्चा प्रभु प्यार। भगवान के दिल पर चढ़ने वालों की तीन धारणाएं होंगी। प्रथम तो उन्होंने बाप को अपने दिल में बिठाया होगा, इसका अर्थ है कि वे योगयुक्त होंगे। दूसरा वे मास्टर सर्वशक्तिवान के नशे में रहेंगे और तीसरा उनकी स्थिति श्रेष्ठ होगी।

श्रेष्ठ स्थिति अर्थात् वे सदा एकरस प्रसन्न रहेंगे, उनके मूड नहीं बदलेंगे, वे क्रोध नहीं करेंगे, वे परेशान नहीं होंगे और वे हर परिस्थिति में शांत व अचल अडोल रहेंगे।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

उपलब्ध पुस्तकें